* B. * Unconscious Resolution of Conflicts:

(संघर्षों का अचेतन समाधान)

निम्नलिखित मनोरचनाएँ अचेतन संघर्षों के समाधान में महत्वपूर्ण है -

1. उदात्तीकरण 2. युक्तिकरण 3. प्रतिक्रिया निर्माण (Reaction formation)
(4) प्रतिगमन (5) दमन (6) स्थानान्तर (7) तादात्मीकरण
(8). अन्तःक्षेपण (9) क्षतिपूर्ति (10) Projection

Conclusion:-

[signature] 08/05/20

Dr. S.K. Suman
Asst. Prof
Dept. of Psychology
Marwari College, DBG

Scanned with CamScanner

(ख) संघर्षों का अचेतन समाधान (Unconscious Resolution of Conflicts) : व्यक्ति की अनेक प्रेरणाओं अथवा इन्छाओं का समाधान चेतन स्तर पर नहीं हो पाता है, तो वे दमित होकर अचेतन मन में चली जाती है । इसका कारण यह है कि व्यक्ति की अनैतिक, असामाजिक तथा अधार्मिक इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो पाती है तो वे अचेतन में जाकर वहाँ से अपनी पूर्त्ति का प्रयास करती है । यदि चेतन-स्तर पर इन अभिप्रेरणाओं का समाधान होने लगे तो व्यक्ति अधिक समय तक सामान्य नहीं रह पायेगा । वह असामान्य हो जायेगा और उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व नष्ट हो जायेगा । इन सभी अभिप्रेरणाओं तथा इच्छाओं की उत्पत्ति ईड के द्वारा होती है । ईड का प्रधान उद्देश्य अपनी इच्छाओं की संतुष्टि करना होता है । इसके सामने समय और स्थान का भेद नहीं होता। वह आनन्द के नियम (Pleasure principle) से निर्देशित होता है । ईड पूरी तरह अचेतन का प्रतिनिधि (Representative) होती है । लेकिन यह प्रत्यक्ष रूप से अपनी इन प्राथमिक इच्छाओं की पूर्ति कर पाता है क्योंकि इन प्राथमिक इच्छाओं को नियंत्रित करने के लिए व्यक्ति के पास सुपरइगो (Superego) की शक्ति होती है । सुपरइगो का प्रधान सम्बन्ध सामाजिक, नैतिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों से रहता है । इन दोनों महाशक्तियों के बीच इगो (ego) रहता है जिसका सम्बन्ध वास्तविकता के साथ रहता है । एक और इगो ईड का भी साथ देता है और दूसरी और यह सुपरइगो की आलोचना से भी बचना चाहता है । अत: इगो (ego) को दो **विरोधी मालिकों** का नौकर (Servant of two widley opposed master) कहा जाता है । वैसी परिस्थिति में ईड की ये इच्छाएँ अतृप्त होकर अचेतन में चली जाती है । वहाँ जाने के बाद अपने समाधान के लिए इगो को प्रेरित करती है । चेतन अवस्था में इगो ईड का साथ नहीं देता । इगो नहीं चाहता है कि ईड की इच्छाओं का समाधान प्रत्यक्ष रूप से हों । दूसरी

Scanned with CamScanner

और अचेतन में दमित इच्छाएँ अपने समाधान के लिए इगो को बाध्य करती रहती है। इस परिस्थिति में ईगो उन इच्छाओं का समाधान करने के लिए कुछ साधन की खोज करता है। अगर वह ईड की इच्छाओं का समाधान न करावे तो इससे उसके अस्तित्व पर खतरा उत्पन्न हो जायेगा। इस स्थिति में इगो यह चाहता है कि ईड की इच्छाओं की पूर्ति भी हो जाय और सुपरइगो को मालूम भी न हो। ईगो ईड और सुपरइगो के बीच अभियोजन करता है।

निम्नलिखित मनोरचनायें अचेतन संघर्षों के समाधान में महत्वपूर्ण है

1. उदात्तीकरण (Sublimation) : किसी परिस्थिति में संघर्ष के समाधान के लिए हमारे अन्दर कुछ सामाजिक मान्यता, प्राप्त विचार या व्यवहार उत्पन्न होते हैं। उन्हें **उदात्तीकरण** कहते हैं। मनोविश्लेषकों के अनुसार कुंठित यौन भावनायें रचनात्मक कार्यों, साहित्यिक कार्यों या वैज्ञानिक उपलब्धियों द्वारा संतुष्ट होती है जिनका ज्ञान व्यक्ति को नहीं रहता। फ्रायड के अनुसार जितने भी कलाकार है वे कुंठित प्रेमी होते हैं। इसने कहा कि ललितकलायें यौन इच्छा को सूचित करती है और आक्रमक प्रवृत्ति से सम्बन्धित संघर्षों का समाधान खेलों के माध्यम से होता है।

2. युक्तिकरण (Rationalization) : कभी-कभी संघर्ष की अवस्था में हम अपने विचारों का ऐसा कारण खोज लेते हैं या तर्क देते हैं जो चेतन अवस्था में इगो के लिए संतोषप्रद हो उसे **युक्तिकरण** कहते हैं। जैसे-कोई छात्र मैट्रिक पास करने के बाद कॉलेज में नहीं पढ़ पाता है तो अपनी कुंठा का समाधान यह कहकर करता है कि कॉलेज में पढ़ना पैसे और समय को बर्बाद करना है। घूसखोर व्यक्ति समाज के सभी लोगों को घूसखोर समझता है और तनाव मुक्त होता है। परीक्षा में उसफल छात्र परीक्षक अथवा प्रश्न-पत्र पर दोषारोपण करता है (i) अंगूर खट्टे हैं (sour grapes types) (ii) नींबू मीठे हैं (sweet lemon type)।

3. प्रतिक्रिया-विधान (Reaction formation) : कभी-कभी संघर्ष उत्पन्न पर व्यक्ति अपनी अचेतन इच्छा के ठीक विपरीत व्यवहार करता है इसमें व्यक्ति संघर्ष को ही अस्वीकार कर देता है जिससे अतृप्त इच्छा का दमन मजबूत हो जाता है, उसे **प्रतिक्रिया विधान** कहते हैं। जैसे-बहुत बड़ा कुकर्मी दानी बन जाता है, प्रेम में असफल होने पर व्यक्ति प्रेममात्र से घृणा करने लगता है।

4. प्रतिगमन (Regression) : जीवन की समस्याओं के समाधान के लिए बाल्यावस्था में पलटने की प्रवृत्ति (escape into childhood) को **प्रतिगमन** कहते हैं। इसमें व्यक्ति का व्यवहारों अपरिपक्व व्यवहार जैसा होता है। इस तरह का व्यवहार बहुत ही प्राथमिक और शिशु जैसा होता है। जैसे घर में नये भाई या बहन के उत्पन्न होने पर बड़ा बच्चा संघर्ष से छुटकारा पाने के लिए बिछावन पर पेशाव करता है या अंगूठा चूँसता है।

5. दमन (Repression) : अनैतिक या निराशा उत्पन्न करने वाली प्रवृत्तियों को व्यक्ति भूल जाने की चेष्टा करता है तो वे दमित होकर अचेतन में चली जाती है, उसे **दमन** कहते हैं। लेकिन अचेतन में जाकर अपने समाधान के लिए प्रयत्नशील रहती है और मौका पाते ही वे इच्छाये दैनिक जीवन की भूलों और स्वप्नों द्वारा अभिव्यक्त हो जाती है। जैसे-किसी निकट सम्बन्धी के प्रति कम भाव उत्पन्न होने पर व्यक्ति मानसिक कष्ट में पड़ जाता है। फलस्वरूप वह इच्छा दवकर अचेतन में चली जाती है। इसमें व्यक्ति अपने कष्टदायक और खतरनाक विचारों को चेतना से इस प्रकार हटा देता है कि व्यक्ति को कोई ज्ञान नहीं होता।

6. रूपान्तर (Conversion) : यह ऐसी मनोरचना है जिसके द्वारा मानसिक संघर्षों का समाधान शारीरिक रोगों के लक्षणों द्वारा होता है। यह क्रिया अचेतन रूप से होती है। इसकी प्रधानता उन्माद (Hysteria) में अधिक देखी जाती है। त्वचा का शून्य हो जाना, अंग विशेष में लकवा हो जाना, दिल की धड़कन का बढ़ना, आंत में घाव (Ulcer) होना आदि मानसिक संघर्षों के कारण होते हैं।

7. तादात्मीकरण (Identification) : यह एक ऐसी मनोरचना है जिसमें व्यक्ति बिना किसी चेतन के मनोवैज्ञानिक रूप से अपनी कुंठित इच्छाओं का तादात्मीकरण दूसरे व्यक्ति के गुणों के साथ कर संतुष्ट होता है। यह अवस्था वयस्क जीवन में अधिक देखी जाती है, जहाँ व्यक्ति अनेक प्रकार के अनुभव प्राप्त करता है और जीवन के हर क्षेत्र में किसी अच्छे गुण के साथ अपना तादात्मीकरण स्थापित करता है। जैसे-कोई व्यक्ति अपना व्यवसाय घर, बैंक राशि पद आदि के साथ करता है उसी प्रकार व्यक्ति कल्पनातमक रूप से किसी कविता कहानी के पात्र आदि के साथ तादात्मस्थापित करता है।

Scanned with CamScanner

8. अन्तःक्षेपण (Introjection) : यह ऐसी मनोरचना है जिसमें व्यक्ति दूसरे को अपना अंग समझने लगता है इसे **अन्तःक्षेपण** कहते हैं । इसके द्वारा व्यक्ति अचेतन रूप से मानसिक संघर्षों से छुटकारा पाता है । यह दोनों स्वरूपों का हो सकता है । एक परिस्थिति में अच्छे गुणों का और दूसरी परिस्थित में बुरे गुणों का अन्तःक्षेपण हो सकता है ।

9. क्षतिपूर्त्ति (Compensation) : यह ऐसी मनोरचना है जिसमें व्यक्ति अपने अवगुणों (Demerits) को छिपाता या कम करता है और उसके बदले कोई दूसरा गुण विकसित कर लेता है । इस प्रकार अचेतन रूप से वह संघर्ष से छुटकारा पाता है। जैसे–शारीरिक दोष वाले व्यक्ति हीनता-भाव से छुटकारा पाने के लिए संगीत, चित्रकला, समाज सेवा, सम्पत्ति अर्जित करना आदि कार्यों के द्वारा क्षतिपूर्ति करते हैं । उसी प्रकार कुरूप लड़कियाँ गीत-संगीत तथा विभिन्न कलाओं के माध्यम से क्षतिपूर्ति करती है । पढ़ने में कमजोर छात्र सुन्दर पोशाक पहनकर या नेता बनकर क्षतिपूर्त्ति करते हैं ।

10. प्रक्षेपण (Projection) : अपनी प्रवृत्तियों तथा अवगुणों को दूसरे पर आरोपित करना **प्रक्षेपण** कहलाता है । इसमें व्यक्ति अपने दोषों को स्वयं स्वीकार नहीं करता बल्कि वह दूसरों पर आरोपित कर देता है और अपने मानसिक संघर्ष से मुक्त हो जाता है । यह क्रिया अचेतन रूप के होती है । उदाहरण के लिए बेइमान व्यक्ति दूसरे को बेइमान समझता है। चरित्रहीन व्यक्ति दूसरों में चारित्रिक दोष खोजता है इस प्रकार के अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं ।

अन्त में (Conclusion) निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि संघर्षों का अचेतन समाधान विभिन्न मनोरचनाओं द्वारा होता है । इससे व्यक्तित्व की रक्षा होती है और व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य तथा संतुलन बना रहता है ।

Scanned with CamScanner